4.9. विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से समाज में लैंगिक भूमिकाएँ Gender roles in society through various institutions

सामाजिक रूप से उपयुक्त माने जाने वाले पुरुषों और महिलाओं के व्यवहार लिंग भूमिकाएं कहलाती हैं। एक लिंग भूमिका सामाजिक मानदंडों का एक सेट है, जो व्यवहार के प्रकारों को निर्धारित करता है ,जो आम तौर पर स्वीकार्य, उपयुक्त, या लोगों के आधार पर वांछनीय माना जाता है। लिंग की भूमिकाएं आमतौर पर अवधारणाओं पर केंद्रित होती हैं, स्त्रीत्व और पुरुषत्व पर, हालाँकि अपवाद और भिन्नताएँ भी विद्यमान हैं। कई बार देखा गया हैं, कि जो एक समाज मे मान्य भूमिका हैं, वह दूसरे समाज मे अमान्य हैं। जैसे किसी समाज मे प्रेम विवाह अनुचित माना जाता हैं, तो कही प्रेमिका को भागकर ही शादी की जाती है, अक्सर ऐसा आदिवासी समाज मे देखने को मिलता है।

लिंग भूमिकाओं की चर्चा हम पिछले पाठ मे भी कर चुके जिसमे बताया था, कि समाज मे पुरुषों के अपने उत्तरदायित्व होते हैं, उनका कार्य घर के लिए आर्थिक सहायता करके पालन पोषण करना था। यदि परिवार पितृसत्तात्मक हो तो, उनकी अधिकार व कानून ही घर मे चलते हैं, घर की सुरक्षा के प्रति उनकी जिम्मेदारी भी बढ़ जाती हैं। पितृसत्तात्मक परिवार मे महिलाओं को बोलने का अधिकार नहीं होता, उनकी बाते सुनी नहीं जाती हैं। पुरुष घरेलू कर्तव्य से इतिश्री कर लेते हैं, बच्चों की देखभाल मे सहायता नहीं करते हैं। वे अपनी भावनाओं को भी व्यक्त नहीं कर पाते हैं।

महिलाओं से उम्मीद की जाती थी, कि वे गृहस्थी चलाने की का कार्य करे। माताओं से यह अपेक्षा की जाती हैं, कि वह गृहकार्य मे दक्ष हों, जैसे :- कपड़े धोने, भोजन पकाने और कमरों की साफ सफाई में। वे बच्चों की देखभाल करे और ध्यान देवे। महिलाओं को पुरुषों की तुलना में अधिक भावुक देखा गया। उनकी इन्ही दबी कुचली भावनाओं को सामने लाने की आवश्यकता हैं।

➢ **समाज की विभिन्न संस्थानो मे लैंगिक भूमिकाए**

परिवार : लिंग भूमिकाएं किसी भी समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंडों द्वारा परिभाषित करती हैं। अधिकांश समाज मे परिवार व्यवस्था लिंग भूमिकाओं पर आधारित होते हैं, और यह लिंग भूमिकाएँ पूर्वनिर्धारित होती हैं, जो परिवार के सदस्यों को जिम्मेदारियों से परिवार चलाने ने सहायता प्रदान करती हैं। लेकिन अधिकतर परिवार मे जब माता-पिता लिंग समानता को एक लक्ष्य के रूप में निर्धारित करते हैं, तो उसमे असमानता के संकेत अंतर्निहित हो सकता है। उदाहरण के लिए, जब घर के कामों को विभाजित किया जाता है, तो लड़के को हो सकता हैं, ऐसे काम कहे जाए, जिसमे ताकत की आवश्यकता हों, जैसे कचरे को बाहर निकालने या अन्य कार्यों को करने के लिए कहा जाता है, जबकि लड़कियों को ऐसे कार्य करने के लिए कहा जाए, जिसमें साफ-सफाई और देखभाल की आवश्यकता होती, जैसे कपड़े धोने को, मोड़ने या कर्तव्यों को निभाने के लिए कहा जा सकता है। यह पाया गया है, कि पिता की उनकी बेटियों के प्रति अपेक्षाओं में मजबूती होती है, जबकि बेटों के लिए मांएं की अपेक्षाएं मजबूत होती हैं। यह सच है, कि कई प्रकार की गतिविधियों में, जिसमें खिलौने की प्राथमिकता, खेल शैली, अनुशासन, कार्य और व्यक्तिगत उपलब्धियां शामिल हैं, उनमे भी व्यक्तिगत भेदभाव परिवार मे देखने को मिलते हैं।

शिक्षा के द्वारा सभी के दृष्टिकोण खुल रहे हैं, और आधुनिकता के साथ संस्कृतियों को पालन करके लैंगिक समानता लाने का प्रयास कर रहे हैं।

जाति: जाति सामाजिक स्तरीकरण के एक पारंपरिक हिंदू आदर्श को संदर्भित करती है, जो वंश और व्यवसाय द्वारा परिभाषित होती है। उदाहरण के लिए पितृसत्तात्मक छाया जो हुई है, या पुरुष प्रधान समाज जो पूरे भारत में महिलाओं के जीवन में तलवार की तरह लटकी हैं। समाज के सभी वर्गों, जातियों और वर्गों मे महिलाओं के प्रति दमनकारी प्रवृत्ति, नियंत्रण के प्रति उत्सुक व्यक्तियों से भरा पड़ा हैं। आज हम जाति गत भेदभाव को हटाने के लिए दलित को अनुसूचित जाति के नाम से संबोधित करते हैं। नाम पर तो प्रतिबंध लगा लिया लेकिन नकारात्मक सोच पर प्रतिबंध नहीं लगा पाये। आज महिलाए और वह दलित हुई तो उस पर और अत्याचार होते हैं, ऐसे समाज मे महिलाओं को बहुत ही ओछी दृष्टि से देखा जाता हैं। महिलाए दुर्व्यवहार के चरम स्तर का अनुभव करती हैं, वे भेदभाव और शोषण के कई स्तरों का अनुभव करते हैं, जिनमें से अधिकांश बर्बर, अपमानजनक, भयावह रूप से हिंसक और पूरी तरह से अमानवीय होते हैं।

धर्म: दुनिया के मुख्य धर्मों में लैंगिक मुद्दों पर अपने विचार हैं, धर्म विशेष के अनुसार समाज में पुरुषों और महिलाओं के लिए उपयुक्त भूमिकाएं हैं। पारंपरिक रूप से, इसमें महिलाओं को घर में रखा गया है, और बाहर की दुनिया में पुरुष वर्ग कार्य करते हैं। पुरुषों और महिलाओं की भूमिकाओं के बारे में समान आदर्श दावे सभी धर्म संप्रदायों सम्मलित होते हैं। सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियाँ जो सर्वाधिक नकारात्मक प्रभाव डालती हैं, उसमे बालिकाओं की शिक्षा। आज भी मलला जैसी बालिकाये धार्मिक कट्टरता के कारण शिक्षा से वंचित हो जाती हैं।

संस्कृति: भारत मे विभिन्न संस्कृतियाँ हैं, और इसी संस्कृति के आधार पर महिलाओं और पुरुषों की भूमिकाएँ निर्धारित होती हैं। दूसरों शब्दों मे हम कह सकते हैं, कि लिंग को आकार संस्कृति द्वारा ही दिया जाता हैं। संस्कृति द्वारा हम महिलाओं और पुरुषों कि विशेषताओं और व्यवहारों के बारे मे बता सकते हैं। लिंग, समाज के लिए सांस्कृतिक अर्थों के कारण एक आयोजित सिद्धांत के रूप में कार्य करता है, जो उसे पुरुष या महिला होने के नाते दिये जाते हैं। सांस्कृतिक रूप से निर्धारित लैंगिक विचारधाराएँ महिला और पुरूष के अधिकारों और जिम्मेदारियों को परिभाषित करती हैं और उनके लिए 'उचित' व्यवहार है। वे संसाधनों तक पहुंच और नियंत्रण, निर्णय लेने में और भागीदारी को भी प्रभावित करती हैं। लिंग विचारधाराएं मे अक्सर पुरुष शक्ति और महिलाओं की हीनता को सांस्कृतिक 'परंपरा' के रूप में व्याख्या की जाती है। प्रमुख संस्कृतियां आर्थिक, राजनीतिक के साथ उन लोगों की सामाजिक शक्ति को सुदृढ़ करती हैं।

मीडिया: जनसंचार माध्यमों का मुख्य उद्देश्य सभी के लिए सार्वभौमिक और उपयुक्त होना है। एक बड़ा वर्ग इसे देखता हैं, मीडिया मे ऐसे शक्ति है, कि वह स्वतः ही सबको आकर्षित कर लेता हैं। चुकि यह समाज का दर्पण होते हैं, अतः इसे गरिमा का ख्याल रखना चाहिए। मीडिया की उत्तर दायित्व होता है, कि वह लिंग समानता मे सहयोग करे। हालांकि

वास्तविकता कुछ और हैं, सामाजिक रुदीवादियों से घिरा बुद्धू बक्सा समाज की रुदीवादियों को ही आगे बढ़ाता हैं। उदाहरण के लिए विज्ञापनो मे महिला और पुरुषों कि भूमिका को प्रस्तुत किया जाता हैं, खाने के समान, वाशिग मशीन, कपड़े धोने की वस्तुए, नहाने के साबुन मे लड़कियों का ही भूमिका होती हैं। पुरुष विज्ञापन टीवी, डिस्टेम्पर के, सीमेंट के ऐसे विज्ञापनो मे दिखाई देता हैं। मीडिया के क्षेत्र मे महिला को संघर्ष करना पढ़ता हैं।

एक और महत्वपूर्ण अंतर विज्ञापनों में देखने को मिलता हैं, क्लोज-अप शॉट। महिला का अधिकतर क्लोज-अप शॉट लिया जाता हैं। महिलाओं का चित्रण उपभोग के रूप मे किया जाता हैं, इसलिए विज्ञापनों में, पुरुषो को सफल, पेशेवर एथलेटिक के रूप में तथा महिला को आकर्षक खूबसूरत वस्तु की तरह प्रस्तुत किया जाता हैं। कार के विज्ञापन मे पुरुषों का काम खरीदना और चलाना रहता हैं, जबकि महिला केवल एक शोपीस की तरह कार के आस पास खड़ी दिखेगी। पुरुषों को बहुत कम ही घर की सफाई करते प्रस्तुत किया जाता है, और अगर करते हैं तो यह एक व्यंग्यपूर्ण अंदाज मे है, जैसे वो कोई छोटा काम हों। पुरुष उत्पाद मे भी महिलाओं का प्रयोग लटकने के अंदाज से किया जाता हैं। यह मीडिया की ऐसे कमजोरी हैं, जो महिला उत्थान मे सहयोग न देकर चरित्र पतन मे सहायक है।

मीडिया रूढ़ियों को तोड़ सकता है, जनता मीडिया से काफी प्रभावित रहती हैं, अतः मीडिया को रूढ़ियों को तोड़ने का प्रयास महिलाओं की मुक्ति, रूढ़ियों को तोड़ने का प्रयास करना चाहिए। सामाजिक परिवर्तन मे मास मीडिया एक महती भूमिका निभा सकती हैं। मास मीडिया न केवल लोगों को सूचना और मनोरंजन देती है, लेकिन यह उनकी राय, दृष्टिकोण और विश्वास को आकार देकर लोगों के जीवन को भी प्रभावित करता है। आजकल पुरुष और महिला भूमिकाओं के बीच अंतर छोटे होते जा रहे हैं, हालांकि बड़े पैमाने पर मीडिया पारंपरिक लिंग रूढ़ियों को समाप्त कर रही है। इसके अलावा, मीडिया के महान प्रभाव के कारण लोगों के दृष्टिकोण मे परिवर्तन संभव हैं जैसे वे कुछ सामाजिक समूहों को नकारात्मकता को अवास्तविक तरीके से चित्रित कर सकते हैं। मीडिया एक शक्ति के लिए एक बहुत उपयोगी उपकरण हो सकते हैं। वैसे भी मीडिया द्वारा संदेशों का हेरफेर किया जाता हैं। परिणामस्वरूप, एक वास्तविक दुनिया का प्रतिबिंब अधूरा और विकृत हो जाता है। मीडिया को देश के उद्देश्यों को पूरे करते हुए सामग्री बनाना चाहिए। एक शिक्षित समाज की तस्वीर रखनी चाहिए। मीडिया जब कोई कहनी प्रस्तुत करता हैं, तो वो उसके काल्पनिक होने का दावा करता हैं, लेकिन वह कही न कही समाज का ही आईना होता हैं। तो वह सच मे काल्पनिक कहानिया क्यो नहीं गढ़ता हैं, जो एक विकसित और सभ्य समाज दे।

फ़िल्में: फिल्मों मे लैंगिक असमानता अधिक स्तर पर हैं, एक तो महिला को उपभोग की वस्तु समझा जाता हैं, उसे फिल्मों मे शोपीस के रूप मे प्रयोग किया जाता हैं, वैसे बॉलीवुड फिल्मों ने समाज में हो रहे बदलावों को अच्छी तरह से चित्रित किया है, पर फिल्मों को लिंग के मुद्दों की अनदेखी करने के लिए हमेशा आलोचना की गई है। अधिकतर फिल्मे समाज मे से उठाई कहानी होती है, वो समाज का ही चित्रण करती हैं, समाज की नपुंसकता को दर्शाती हैं, वो बदलाव दिखाने मे हिचकती हैं। अधिकांश में फिल्मों, महिलाओं को दूसरी श्रेणी का दर्जा दिया जाता है, उन्हें हीन और कमज़ोर माना जाता है। महिला पात्र को महत्व केवल उन्हें हीरो की यात्रा के लिए एक आइटम गर्ल या एक आयामी उत्प्रेरक के रूप प्रदर्शित किया जाता है। नायिकाओं को प्रेमालाप और यौन जैसे मुद्दों के नाम पर परेशान और शर्मिंदा किया जाता है। फिल्मों में हमले और बलात्कार को नियमित रूप से दिखाया गया है। महिलाओं को आम तौर पर मात्र घर के श्रंगारिक साधन के रूप मे ही दिखाया जाता हैं। ज्यादातर मुख्यधारा की फिल्में पुरुष-महिला के संबंधों को चित्रित करती हैं, एक सामाजिक गतिविधि का साँचा, अर्थात् प्यार में पड़ना और या तो शादी करना आदि।

कानून और राज्य: "राज्य उस ढांचे को निर्धारित करता है, जिसके भीतर कानून अपने आप जुड़ जाता हैं, जैसे विवाह नामक संबंध, यह संभोग के लिए सहमति की उम्र निर्धारित करता है, यह बताता है, कुछ प्रकार के संभोग आपराधिक कृत्य, इस प्रकार के कृत्यों को नियंत्रित करता है, यह राज्य का कार्य हैं, वह कानूनी तौर पर गर्भपात की इजाजत देता है। अदालतें मिसालें और नियम तय करती हैं, तलाक की विभीन्न परिस्थिति और उनसे बचने के लिए परामर्श तक कार्य राज्य और कानून द्वारा होता है। ये सभी कार्य गहराई से प्रभावित करते हैं, लोगों के जीवन की गुणवत्ता और सामाजिक नीति को कानून व्यापक है। संविधान मे कई कानून लैंगिक समानता के लिए बने हैं, जिसे राज्य लागू करता हैं, जैसे सभी को समान वेतन मिलना चाहिए, सभी को शिक्षा का अधिकार हैं, लैंगिक दृष्टि से आप किसी को भी कोई कार्य करने से नहीं रोक सकते हैं आदि। कानून द्वारा सभी के मौलिक अधिकारों की रक्षा होती हैं।

शिक्षक की भूमिका : मीडिया लगातार पारंपरिक रूढ़ियों को बढ़वा देता है, जबकि उसका कार्य महिलाओं और पुरुषों के आपसी संबद्ध को एक स्वस्थ दृष्टिकोण देना है। शिक्षक लैंगिक भूमिका के प्रति संवेदनशील होना चाहिए, तभी लिंग समानता आएगी। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थी की क्षमता निर्माण लिंग के अनुसार करने की आवश्यकता हैं, ताकि प्रत्येक लिंग विशेष मे आत्मविकास की भावना का विकास हों, और साथ ही शिक्षक को सामाजिक मुद्दों को पर ध्यान देना चाहिए, जिसके कारण लिंग असमानता फैली है, और उसे दूर कैसे किया जा सकता हैं। मीडिया से फैली लिंग संबंधी भ्रांति लिंग के लिए प्रतिबद्ध सशक्त शिक्षकों द्वारा ही संभव हैं। लिंग-संवेदनशील, सशक्त महिला व लड़कियों के लिए शिक्षक सकारात्मक रोल मॉडल के रूप में कार्य कर सकते हैं। इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षण मे यह व्यवस्था होने चाहिए, कि ऐसा

उसमे शिक्षको को नेतृत्व, सशक्तिकरण, और लिंग समानता के प्रयास के लिए प्रशिक्षण देना चाहिए। शिक्षकों को सक्षम करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में ऐसे कार्यक्रम का समावेश करना चाहिए, जिससे लिंग भेदभाव दूर हों और लड़कियों को समान अवसर मिले और साथ ही ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करने चाहिए,जिससे लड़के भी लिंग समानता के लिए बढ़वा दे। निम्न बिन्दुओं पर भी विचार किया जाना चाहिए :-

- यौन शिक्षा को शारीरिक जागरूकता के रूप में स्कूली शिक्षा के रूप में शामिल किया जाए।
- हायर सेकंडरी कक्षाओं में लागू किया जाए।
- यह शिक्षा 15 वर्ष की आयु समूह के बच्चों पर लागू की जाए।
- यौन शिक्षा को उम्र के अनुसार पढ़ाया जाए।
- यौन रोगों एवं यौन अपराध को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।
- मनोवैज्ञानिकों द्वारा शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।
- सेमिनार एवं प्रोजेक्ट द्वारा इस विषय पर विचार-विमर्श किया जाना चाहिए।
- पाठ्यक्रम सरल, स्पष्ट व रोजगारोन्मुख होना चाहिए।

जानकारी के अभाव में जो समस्याएं उत्पन होती हैं वो इस प्रकार है:-

- कम उम्र में किशोरों का आपस में यौन संबंध बनाना।
- बहुत कम उम्र में लड़कियों पर गर्भवती होने का खतरा।
- गर्भवती होने के बाद मानसिक तनाव।
- बाजार में उपलब्ध किसी भी प्रकार की गर्भनिरोधक गोलियों का सेवन।
- पालकों से चर्चा करने में डर व झिझक।
- कई तरह के यौन रोग से ग्रसित होना।
- आत्मग्लानि से ग्रसित होकर आत्महत्या करना।
- वैज्ञानिक तरीके से दी जाएं यौन शिक्षा

शिक्षा किसी भी क्षेत्र की आवश्यकता है। यौन शिक्षा को वैज्ञानिक तरीके से पाठ्यक्रम में शामिल किए जाएं। वहीं शिक्षकों को भी विशेष प्रशिक्षण दिया जाए। शिक्षा देने का तरीके पर बहुत कुछ निर्भर करेगा। शिक्षा देने का तरीका बदल गया तो छात्रों में जुगुप्सा बढ़ेगी। छात्रों पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। शिक्षा शैली अन्य विषयों की तरह सामान्य जानकारी देने वाली हो।

जानकारी के अभाव में किशोरवय बच्चे चोरी-छिपे वह सब कर रहा है, तो वयस्क होने के बाद करनी चाहिए। पाश्चात्य सभ्यता में यह आम बात है। अब हमारे समाज में भी लिव इन रिलेशनशिप जैसी चीजें आम हो रही है। ऐसे में छात्रों को सकारात्मक रूप में यौन शिक्षा दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम अनावश्यक उत्तेजना पैदा करने के बजाय वैज्ञानिक स्तर पर जानकारी देने वाला हो। सेक्स एजुकेशन में हर पहलू पर चर्चा होनी चाहिए। इससे छात्र उन चीजों के साथ साइड इफेक्ट को भी समझ सकेंगे।

मीडिया का नकारात्मक प्रभाव; टेलीविज़न, इंटरनेट, और तकनीकी विकास के साथ –साथ विदेशी मीडिया के खुलेपन के कारण बच्चों को घर, विद्यालयों, और समाज के भीतर कई चुनोतियाँ का सामना करना पढ़ रहा हैं। ऐसे प्रभाव लोगों के व्यवहार और जीवन शैलियों को प्रभावित करते हैं। ये प्रभाव युवा मन को उन पारवारिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, पारंपरिक प्रचलनों और नैतिक मूल्यों से दूर ले जा रहे हैं, जिनका भारतीय समाज मे विशेष स्थान हैं। आज इस नकारात्मक प्रभाव को रोकने के लिए जीवन कौशल शिक्षा व यौन शिक्षा आवश्यक हैं।

अभ्यास प्रश्न :-

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. **LSBE** का पूरा नाम क्या हैं।
   a जीवन आधारित शिक्षा
   b जीवन कौशल आधारित शिक्षा
   c जीवन सामाजिक आधारित शिक्षा
   d इनमे से कोई नहीं